ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–७१
दिनांक- मंगलवार, १९ सितम्बर, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.9 एवं 24.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 70 प्रतिशत, हवा की औसत गति 0.9 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.9 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.7 एवं दोपहर में 37.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 32.0 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(20–24 सितम्बर, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 20–24 सितम्बर, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- अगले 2–3 दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में हल्के से मध्यम बादल देखे जा सकते है। उसके बाद 24–25 सितम्बर तक मध्यम से घने बादल छा सकते है। मानसून सक्रिय होने की सम्भावना है जिसके कारण 22–24 सितम्बर के बीच अच्छी वर्षा की सम्भावना है। तराई के जिलों के अनेक स्थानों पर मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है। जबकि मैदानी भागो के जिलों में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 22–24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- औसतन 15–20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्य रूप से पुरवा हवा हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछले दिनों में उत्तर बिहार में हल्की बर्षा हुई है। अगले 24–72 घंटों के दौरान अनेक स्थानों पर बर्षा होने की संभावना को देखते हुए किसान भाई इस अवधि में कीटनाशी दवाओं का छिड़काव स्थगित रखें। कीटनाशी दवाओं का छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। धान, मक्का, खरीफ प्याज, चारा एवं अन्य सब्जियों की फसलों में आवश्यकतानुसार नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। वर्षा की सम्भावना को देखते हुए खड़ी फसलों में सिचाई स्थागित रखें।
- लत्तीदार वाली सब्जियों की फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरट का रुप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा–मेढ़ा, कभी–कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते है। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदककर दुसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नही रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इक्ठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करे। अधिक क्षति होने पर 1 किलोंग्राम छोआ एवं 2 लीटर मैलाथियान 50 ई0सी0 तरल दवा को 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रुप से छिड़काव करे।
- भिंडी की फसल में फल एवं प्ररोह वेधक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू भिंडी फलों के अन्दर छेद बनाकर उसके अन्दर घुसकर फलों को खाते हैं तथा इसे पूरी तरह नष्ट कर देते हैं। इसकी रोक–थाम के लिए सर्वप्रथम प्रभावित फलों को तोड़कर मिट्टी के अन्दर दबा दें। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफॉस 25 ई0सी0 दवा का 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी या डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाभा निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विषेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक–एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।
- मिर्च, बैगन, टमाटर वाली सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है जिससे पौध के पत्ते टेढ़े–मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते है। यह बड़ी तेजी से एक–पौधें से दुसरे पौधे में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का 0.3 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं में बरसात के अन्त में यकृत कृमि (लिवर फ्लुक) एवं एम्फीस्टोम का संक्रमण खासकर नदी, तालाब या बाढ़ के पानी से संक्रमित चारा खाने से बहुत अधिक होता है। इससे वचाव के लिए ऑक्सीक्लोजानाईड एवं लिबामिजोल 100 मि0ली0 खाली पेट पशुओं को अवश्य पिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 35.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 22.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.2 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)